अक्रम यूथ

अक्टुबर 2021 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

हमारे सुपर हीरो हनुमानजी

अनुक्रमणिका

4 हनुमानजी का परिचय

5 हनुमानजी के नाम और अर्थ

6 ज्ञानी विद् यूथ

8 हनुमानजी की रामभक्ति

10 Q & A

12 भीम का घमंड

14 आत्मज्ञान वहाँ अहंकार नहीं!

16 गोस्वामी तुलसीदास

18 अक्रमपीडिया

20 शक्ति का दुरूपयोग

22 हनुमानजी के नाम ढूँढ़ें

23 #कविता

अक्टुबर 2021

वर्ष : 9, अंक : 6

अखंड क्रमांक : 102

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India :200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

मित्रों,

आज हम बात करने जा रहे हैं एक ऐसे सुपर हीरो की जो बच्चों, युवाओं, ब्रह्मचारियों के साथ-साथ असंख्य राम भक्तों को भी बेहद प्रिय हैं। ऐसा माना जाता है कि उनकी भक्ति से बुद्धि, बल और विद्या की प्राप्ति होती है। जी हाँ दोस्तों हम बात कर रहें हैं हमारे पसंदीदा सुपर हीरो हनुमानजी की।

प्राचीन महाकाव्य रामायण के मुख्य पात्रों में से एक हनुमानजी, जिनकी गिनती हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध देवों में की जाती है। उनकी अद्‌भुत शक्ति, वीरता, ब्रह्मचर्य और भगवान श्रीराम के प्रति स्वामीभक्ति से संबंधित कई कहानियाँ रचित की गई हैं। अक्रम यूथ के इस अंक में कुछ ऐसी ही कहानियाँ और घटनाओं का संकलन किया गया है, जिससे निश्चित ही हनुमानजी के प्रति हमारे आदर भाव में वृद्धि होगी।

इक्कीसवीं सदी में जहाँ सेवा, समर्पण, ब्रह्मचर्य जैसे महान गुणों का मूल्य दिन-ब-दिन घटता जा रहा है, वहाँ हनुमानजी को समर्पित यह अंक निश्चित रूप से इन गुणों को विकसित करने में आपकी मदद करेगा।

-डिम्पल भाई महेता

हनुमानजी का परिचय

वानरराज केसरी और रानी अंजनी के बहादुर पुत्र श्री हनुमानजी का जन्म कर्नाटक के किष्किंधा नगरी में हुआ था। हनुमानजी का नाम सुनते ही हमें हँसते-हँसाते, शरारती, बाल ब्रह्मचारी, रामभक्त जैसे कई विशेषण याद आ जाते हैं। सही कहा न, मित्रों?

हनुमानजी में इतने सारे महान गुण थे कि जिन्हें सुनकर हनुमानजी के प्रति हमारी भक्ति और ज्यादा बढ़ जाएगी। तो चलो, आज हम हनुमानजी के जीवन की कुछ प्रेरक घटनाओं के बारे में पढ़ें और उनकी अनन्य भक्ति एवं समपर्ण भाव को समझने की कोशिश करें।

"हनुमान" नाम का रहस्य

शायद आप नहीं जानते होंगे कि "हनुमान" नाम संस्कृत भाषा में से लिया गया है। संस्कृत में, "हनु" का अर्थ है "जबड़ा" और "मान" का अर्थ है "अग्रणी"। एक पौराणिक कथा के अनुसार, बचपन में एक बार हनुमानजी सूर्य को फल समझकर उसे खाने जा रहे थे। तब देवताओं के राजा इन्द्र ने उन्हें रोकने के लिए वज्र से प्रहार किया था, जिससे उनका जबड़ा क्षतिग्रस्त हो गया। इस घटना के बाद, बालक मारुति को "हनुमान" नाम मिला।

हनुमानजी के नाम और अर्थ

अभयन्त :- निडर।

अनिल :- पवन के देवता।

अतुलित :- जिनकी कोई तुलना न हो।

बजरंगबली :- जिनके हाथ और पैर बिजली जितने शक्तिशाली हैं।

दीनबंधवे :- लाचार की मदद करने वाला।

केसरीनंदन :- केसरी के पुत्र।

लोकपूज्य :- लोग जिनकी पूजा करते हैं।

प्रज्ञ :- महान विद्वान।

ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता : हनुमानजी से हमें क्या माँगना चाहिए?

नीरू माँ : यदि हनुमानजी से कुछ माँगना हो तो उनके जैसा बह्मचर्य माँगो। यदि किसी की शादी नही हुई हो तो वह माँगता है कि मुझे पत्नी चाहिए और अगर शादी हो गई हो तो माँगता है कि मुझे बच्चा चाहिए। हनुमानजी तो बालब्रह्मचारी हैं, तो तुम्हें पत्नी कैसे देंगे?! हम उनसे ऐसा ही सब माँगते रहे हैं। ये सब माँगना बंद करो...मुझे मोक्ष के सिवाय कुछ नही चाहिए, यह माँगना।

प्रश्नकर्ता : सही बात है।

नीरू माँ : ये सब सांसारिक जीवन को बढ़ावा देने की बाते हैं। मोक्ष के लिए इनकी ज़रूरत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : नीरू माँ, हनुमान चालीसा में तो सब माँगने की बातें लिखी हुई हैं। तो फिर हमें क्या करना चाहिए?

नीरू माँ : तुम हनुमान चालीसा बोलते हो, तो राम चालीसा बोलते हो कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : राम चालीसा जैसा कुछ है ही नहीं।

नीरू माँ : तो भगवान राम को बुरा नही लगेगा? एक भाई ने मुझसे कहा, "नीरू माँ, आप दादा चालीसा लिखो ना।" मैंने कहा, "दादा चालीसा

यदि हनुमानजी से कुछ माँगना हो तो उनके जैसा बह्मचर्य माँगो।

नहीं है पर सीमंधर चालीसा है। चालीस बार नमस्कार कर लेना।"

इसका कोई अंत ही नहीं है। अज्ञान दशा में ये सब करते थे। हमें किसी से कोई एतराज नहीं है, सबको नमस्कार करते हैं। लेकिन हमें किसी से कुछ चाहिए नहीं।

शुद्धात्मा में रहकर हनुमानजी को नमस्कार करो। शनिवार के दिन मंदिर जाकर हनुमानजी के दर्शन कर आना और मंदिर न जाना हो तो मन से ही दर्शन कर लेना। दिन-रात 'मैं शुद्धात्मा हूँ' जागृति में रहना।

हनुमानजी से हमें बहुत प्रेम है क्योंकि वे स्वभाव से ब्रह्मचारी थे। हनुमानजी ने हनुमान चालीसा की बात नहीं की है। यह तो लोगों ने बाद में बोलना शुरू किया। हनुमानजी को नमस्कार करके अगर बह्मचर्य माँगते हो तो वह काफी है, हनुमानजी बहुत प्रसन्न हो जाएँगे। एक तरफ तुम यदि चार बार हनुमान चालीसा बोलते हो और दूसरी तरफ सिर्फ एक ही बार ब्रह्मचर्य माँगते हो, तो भी हनुमानजी बहुत प्रसन्न हो जाएँगे। उन्हें लगेगा कि यह मेरा सच्चा भक्त है!

हनुमान चालीसा में लिखा है क्या कि हनुमानजी, मुझे आपके जैसा ब्रह्मचर्य दीजिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं लिखा है।

नीरू माँ : नहीं लिखा है? तो फिर बोलो! कुछ और क्या माँगना? यदि तुम माताजी को पूजते हो तो पूजा में कुछ और करने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ शक्ति माँगो कि मेरी प्रकृति सहज हो जाए। आत्मा तो सहज है ही, प्रकृति सहज हो जाए तो प्रकृति भी छूटे और हम भी छूट जाएँ। शक्ति दीजिए, संसार के विघ्नों को पार करने की शक्ति दीजिए। मैं सभी कर्मों को पार कर पाऊँ ऐसी शक्ति माँगनी चाहिए। ऐसा नहीं कहना चाहिए कि आप मेरा दुःख दूर कर दीजिए!

हनुमानजी की रामभक्ति

आप जानते ही होंगे कि हनुमानजी अपने स्वामी श्रीराम की बहुत भक्ति करते थे। वे उनके लिए कुछ भी करने को हमेशा तैयार रहते थे।

तो चलो, पढ़ते हैं हनुमानजी का एक ऐसा ही किस्सा...

हनुमानजी ने सीताजी को मांग में सिंदूर लगाते हुए देखा तो उनसे पूछा कि "आप अपनी मांग में सिंदूर क्यों सजाती हो?"

सीताजी ने उत्तर दिया कि, "मांग में सिंदूर लगाने से मेरे स्वामी की आयु लंबी होगी।"

यह सुनकर हनुमानजी आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने सोचा कि, 'मांग में थोड़ा सा सिंदूर लगाने से स्वामी की आयु बढ़ती है, तो मैं अगर अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगा दूँ तो श्रीराम की आयु कितनी बढ़ जाएगी!' यह सोचकर हनुमानजी ने अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगा लिया।

जब श्रीराम ने हनुमानजी के पूरे शरीर पर सिंदूर लगा हुआ देखा तो उन्होंने हनुमानजी से इसका कारण पूछा। हनुमानजी से कारण जानकर श्रीराम बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि "हनुमान मेरे सच्चे भक्त हैं।"

जैसी अनन्य भक्ति हनुमानजी को श्रीराम के प्रति थी वैसी ही अनन्य भक्ति नीरू माँ को दादाश्री के प्रति थी...

दादाश्री से पहली बार मिलते ही नीरू माँ के हृदय में आजीवन दादाश्री और हीराबा की सेवा करने की भावना जागी। नीरू माँ के दिल में दादा के प्रति अनन्य प्रशस्त राग तो था ही ऊपर से उन्हें दिन-रात दादा की सेवा करने का मौका मिला, जिससे उन्हें दादा को बहुत नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। दूसरी ओर, नीरू माँ के कंधो पर कोई संसारिक जिम्मेदारी नहीं थी इसलिए उनका दिल पूरी तरह से दादा में ही लग गया।

नीरू माँ के मन में सदैव एक ही भाव रहता था कि उन्हें हमेशा दादा के साथ रहने मिले और हमेशा दादा की सेवा करने मिले। दादा के साथ रहने और उनकी सेवा करने में उन्हें दादा का बहुत प्रेम मिलता था और इतना आनंद आता था कि उन्होंने मन ही मन तय कर लिया कि जीवनभर दादा की सेवा करने और उनके सान्निध्य में रहने के लिए कोई बाधा न आए तो बहुत हो गया। संक्षेप में कहा जाए, तो नीरू माँ को दादा की सेवा की तुलना में कोई भी चीज़ कीमती नहीं लगती थी।

हनुमानजी ने सीताजी को मांग में सिंदूर लगाते हुए देखा तो उनसे पूछा कि "आप अपनी मांग में सिंदूर क्यों सजाती हो?"

नीरू माँ का चित्त सदा ही दादामय रहता था। इसलिए वे दादा को जिस चीज़ की ज़रूरत हो वह चीज़ दादा के कहने से पहले ही उन्हें हाज़िर कर देते थे। आधी रात को भी दादा को किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो उनको पता चल जाता था। उनका आत्मा दादामय ही हो गया था। अपने देह से भी ज्यादा सावधानीपूर्वक वे दादाश्री के देहमंदिर की देखभाल करते थे। उनका देह दादा से अलग दिखता था पर अंदर से चित्त हर समय दादामय रहता था। दादा के सभी वाइब्रेशन्स उन्हें पहुँचते थे और वे उनका अनुभव कर पाते थे।

देखा दोस्तों, निरंतर दादाश्री का निदिध्यासन और दादामय होकर उनकी सेवा करने के अलावा नीरू माँ को और कोई विचार नही आता था। साथ ही, उनके मन में हमेशा ऐसा रहता था कि "दादा मेरे लिए उपकारी हैं, मेरा ही आत्मा है।" उनकी सेवा और अभेदता से खुश होकर दादाश्री ने अंत में कहा, 'नीरूबेन हमेशा हमारे साथ इस तरह एक होकर रहे जैसे कि एक देह और दो आत्मा हो।' दादाश्री ने नीरू माँ पर असीम कृपा बरसाई।

Q & A

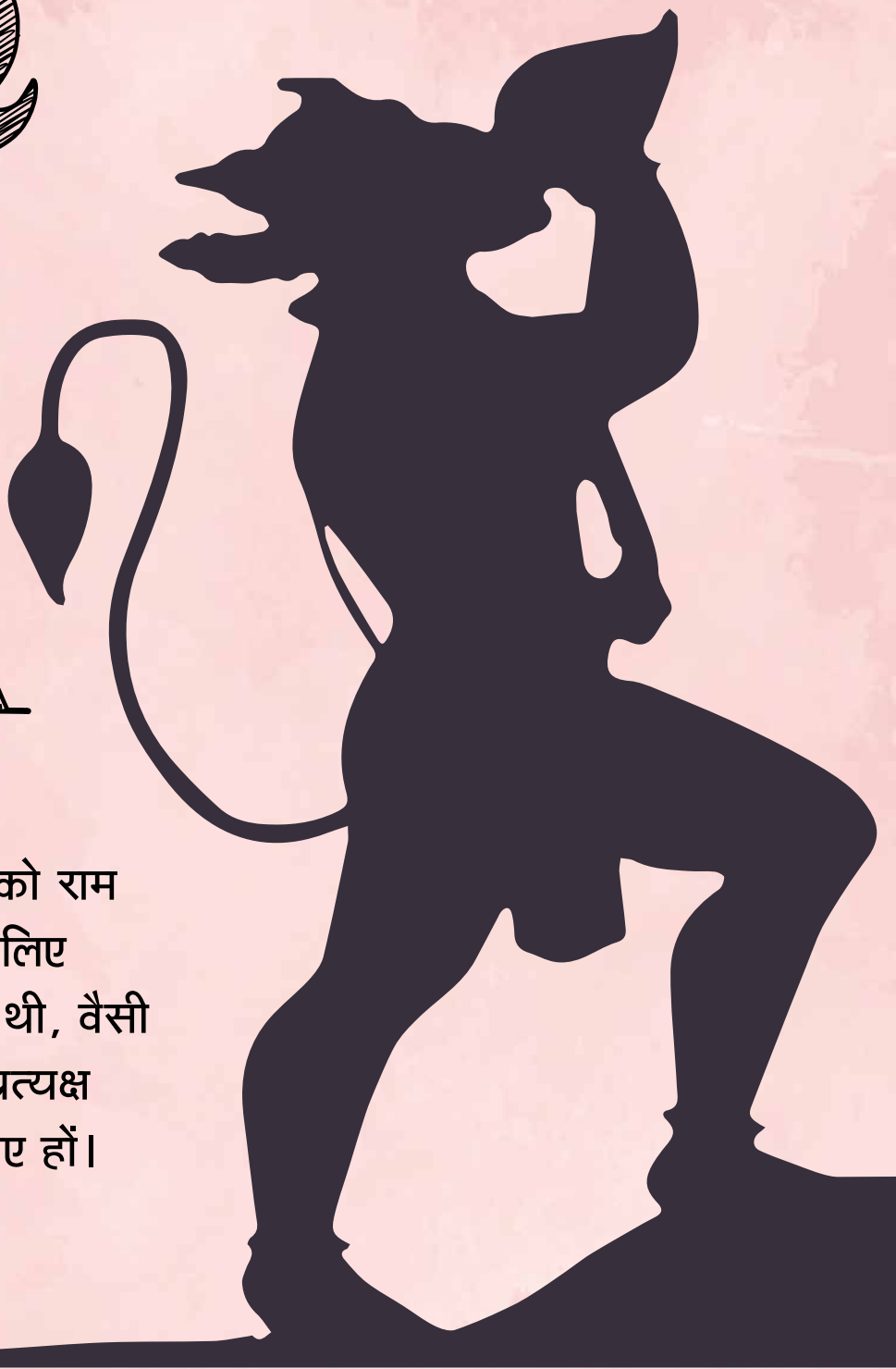

हनुमामजी को राम भगवान के लिए जैसी भक्ति थी, वैसी भक्ति मुझे प्रत्यक्ष ज्ञानी के लिए हों।

प्रश्नकर्ता : हनुमानजी से क्या माँगना चाहिए? उनसे क्या सीखना चाहिए?

आप्तपुत्र : मेरा नीरू माँ के साथ एक प्रसंग है। एक बार मैंने नीरू माँ से कहा "नीरू माँ, मुझे स्पेशल विधि करनी है।" नीरू माँ ने कहा "चलो, आज हनुमानजी के पास तुम्हारी विधि करती हूँ। लेकिन तुम हनुमानजी से क्या माँगोगे?" मैंने कहा, "मैं हनुमानजी से ब्रह्मचर्य माँगूँगा।" नीरू माँ ने कहा "पागल! ब्रह्मचर्य तो है ही, पर स्वामीभक्ति माँग। तुझमें इसकी कमी है।" उस दिन मुझे ऐसी भावना हुई कि जैसी भक्ति हनुमानजी को भगवान राम के प्रति थी वैसी ही भक्ति मुझे प्रत्यक्ष ज्ञानी के प्रति हो।

प्रश्नकर्ता : हाँ, आपका व्हाट्सएप स्टेटस देखा है। उसमें लिखा है, "वर्किंग ऑन स्वामीभक्ति"।

आप्तपुत्र : हनुमानजी के जैसी भक्ति यानी क्या? जैसे हनुमानजी और भगवान राम दोनों दो शरीर और एक आत्मा थे, उनके जैसे। हनुमानजी श्रीराम की क्रिया, वाणी, आचार, कुछ नहीं देखते थे। सिर्फ उनके अंतराशय समझकर उस आशय के अनुसार सब काम करते थे। हनुमानजी ने कभी भी अपने बारे में नहीं सोचा और भगवान राम द्वारा सौंपे गए सभी काम निष्ठा से करते रहे।

ठीक इसी तरह मैं भी पूज्यश्री के साथ रहने का प्रयास करता हूँ। सारे दिन में जो भी घटना होती है तो मैं देखता हूँ कि स्वामीभक्ति में मुझसे क्या गलती हुई? स्वामीभक्त कैसा होता है? उसके विचार कैसे होते हैं? उसकी बातें कैसी होती हैं? उसकी वाणी कैसी होती है? इसके आधार पर देखता हूँ कि क्या मिस हो गया। इस तरह रोज़ इम्प्रुवमेन्ट लाने की चेष्टा करता हूँ।

जैसे हनुमानजी भगवान राम के साथ रहते थे, उसी तरह मैं भी पूज्यश्री के साथ रहता हूँ। हाल में प्रत्यक्ष ज्ञानी तो पूज्यश्री ही हैं।

भीम का घमंड

पाँचों पांडव के वनवास के दौरान एक दिन भीम क्रोधित होकर जंगल से गुजर रहे थे। मार्ग में एक वृद्ध वानर विश्राम कर रहे थे। उनकी पूँछ भीम के रास्ते में आ रही थी। भीम ने वानर से कहा, "वृद्ध वानर, आपकी पूँछ मेरे मार्ग में आ रही है। कृपया, इसे हटा लीजिए..."

वृद्ध वानर ने भीम की बात सुनी पर ऐसे बैठे रहे कि जैसे उन्हें कोई फर्क ही नहीं पड़ा हो। यह देख कर भीम ने फिर से कहा, "आप सुन रहे हैं न? अपनी पूँछ हटाईए।"

वृद्ध वानर ने कहा, "भाई, राम का नाम लो और मुझे आराम करने दो।" भीम क्रोधित हो गए और कहा "आप अपनी पूँछ हटा रहे हैं या मैं इसे उठा कर फेंक दूँ।"

वृद्ध वानर ने धैर्य से उत्तर दिया, "भाई, राम का नाम लो और मेरी पूँछ को हटा कर निकल जाओ।"

यह सुनकर भीम की आँखें लाल हो गईं और उन्होंने वानर से कहा, "आप मुझे पहचानते नहीं कि मैं कौन हूँ। आखिरी बार कह रहा हूँ, आप अपनी पूँछ हटाते हो या मैं उठा कर फेंक दूँ?"

वृद्ध वानर को हँसी आ गई और वे बोले, "ऐसा! आप मेरी पूँछ हटाओगे? अच्छी बात है, हटा लो। वैसे भी कितने सालों से मेरी इच्छा है कि कोई मेरी पूँछ हटा दे।" अपनी शक्ति के घमंड में चूर भीम हँसने लगे। भीम ने सोचा कि इस वृद्ध वानर को पता नहीं है कि मैं महाबली भीम हूँ इसलिए मुझे अपनी पूँछ हटाने के लिए चुनौती दे रहे हैं। मूर्ख वानर!

ऐसा सोचकर हँसते हुए भीम एक हाथ से पूँछ हटाने लगे लेकिन वे पूँछ उठा ही नहीं पाए। भीम ने फिर एक बार पूँछ उठाने का प्रयास किया। यह देखकर वृद्ध वानर हँसने लगे। वानर को हँसते देखकर भीम क्रोधित हो गए और दोनों हाथों से पूँछ उठाने लगे।

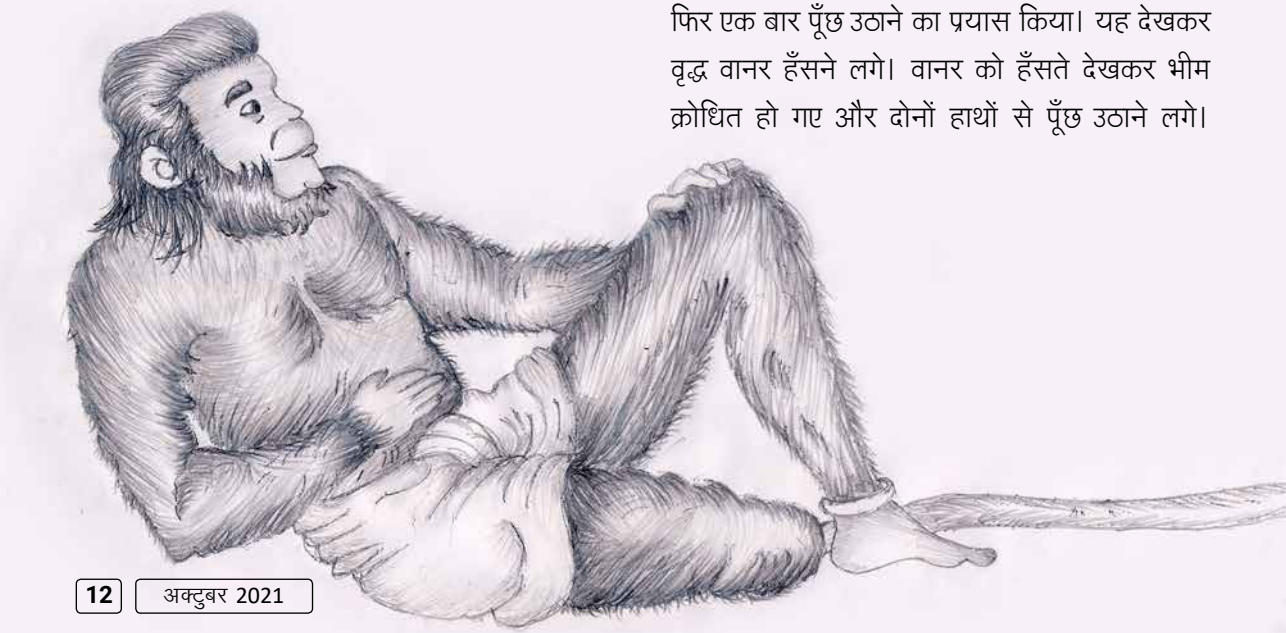

लेकिन वे पूँछ उठा ही नहीं पाए। यह देखकर वानर ने कहा, "उठाओ, उठाओ। थोड़ा बाहुबल लगाओ।" यह सुनकर भीम ने अपनी पूरी ताकत लगा दी। उन्हें पसीना आ गया और उनके दोनों हाथ लाल हो गए लेकिन फिर भी वे पूँछ उठा नहीं पाए। भीम को समझ में आ गया कि ये कोई साधारण वानर नहीं हैं। अतः भीम वानर के पास गए और उनसे कहा, "हे वानर! आप मुझे आपके सच्चे स्वरूप के दर्शन दीजिए।" यह सुनकर वानर ने कहा, "राम का नाम लो भाई, सेवक के दर्शन करके क्या करोगे?" यह सुनकर भीम समझ गए कि ये तो रामभक्त हनुमान हैं।

भीम ने कहा "हे भ्राता हनुमान, आपने मुझे पहले ही क्यों नहीं बताया कि आप रामभक्त हनुमान हो?" हनुमानजी ने उत्तर दिया, "प्रिय अनुज भीम, तुम्हारे गुस्से और घमंड को दूर करने के लिए तुम्हें यह सबक सिखाना जरूरी था। तुम आराम से मेरी पूँछ लांघ कर जा सकते थे, पर तुमने अपनी शक्ति के घमंड के कारण ऐसा नहीं किया। किसी व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी के बिना सिर्फ घमंड के कारण उसके द्वारा दी गई चुनौती को स्वीकार करना मूर्खता है। जब मैंने तुम्हें चुनौती दी तब तुमने सोचा कि मैं महा शक्तिशाली हूँ और एक वृद्ध वानर को आराम से हरा दूँगा। जैसे मैंने वृद्ध वानर का वेश बनाया वैसे ही कोई भी व्यक्ति किसी भी रूप में आकर तुम्हें चुनौती दे सकता है और अपने घमंड और गुस्से के कारण तुम्हें हार का मुँह देखना पड़ सकता है।"

यह सुनकर भीम को अपनी गलती का अहसास हुआ और उन्होंने उसी क्षण तय किया कि वे आज के बाद कभी भी अपनी ताकत का घमंड नहीं करेंगे और गुस्सा करना भी छोड़ देंगे।

तो देखा मित्रों.... किस तरह हनुमानजी ने शक्तिशाली भीम का अहंकार तोड़ा! दादाश्री भी हमारे इगोइज़म को भस्मीभूत कर देते हैं। तो चलो, देखते हैं इस बारे में दादाश्री क्या कहते हैं...

आत्मज्ञान वहाँ अहंकार नहीं!

'ज्ञानी पुरुष' के पास सभी चीज़े होती है, इससे सब कुछ विलय हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : इगोइजम विलय हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, हमारी वाणी ही ऐसी है कि जिससे अहंकार विलय हो जाता है। इस वाणी से तो क्रोध-मान-माया-लोभ सभी चले जाते है। अहमदाबाद में एक सेठ आए थे। उन्होंने कहा कि 'मेरा क्रोध ले लो।' तो ले लिया हमने! 'ज्ञानी पुरुष ' के पास सभी चीज़े होती है, इससे सब कुछ विलय हो जाता है।

ये क्रोध-मान-माया-लोभ सब क्यों होता है? किसके आधार से होता है। लोग कहते है न कि 'मुझे क्रोध आता है।' अब ये 'मुझे होता है।' ये आधार देते है, इससे यह टिका हुआ है। 'ज्ञानी पुरूष' आधार ले लेते है इसलिए वह विलय हो जाता है। धीरे-धीरे क्रोध कम करने जाता है तो नहीं होता और अगर हो भी जाए तो मान बढ़ जाता है! इसलिए ये तो ऐसा है कि खुद का बिल्कुल भी भान नहीं और सब सर पर लेकर घूमता है! ये तो 'खुद के' भान के बिना ही पूरा व्यवहार हो रहा है, बिल्कुल भान नहीं।

हृदय चीरा जाए तो कौन दिखेंगा?

एक दिन अचानक दादाश्री ने पूज्यश्री को पूछा,

दादाश्री : दीपक, जैसे हनुमानजी का हृदय चीरकर देखा जाए तो उसमें राम दिखाई देते हैं तो तुम्हारा हृदय चीरा जाए तो कौन दिखेगा?

पूज्यश्री : दादा, एक तरफ आप और एक तरफ नीरू बहन।

दादाश्री : कोई एक ही होता है, दो नहीं हो सकते।

पूज्यश्री : तो फिर मल्लिनाथ, यानी नीरू बहन।

दादाश्री : बहुत अच्छा। तो उनको ही रखना, दोनो एक ही हैं।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 1532 में राजापुर गाँव में हुआ था। जन्म के समय उनका नाम 'रामबोला' रखा गया। रामबोला का जन्म होते ही उसकी माता की मृत्यु हो गई, इसलिए रामबोला को अपशकुनी मान कर घर से निकाल दिया गया था। ये दृश्य रामबोला के घर की नौकरानी, चुनिया देख नहीं सकी। वह रामबोला को अपने साथ ले गई और उसका पालन-पोषण करने लगी। परन्तु 5 साल के बाद चुनिया की भी मृत्यु हो गई। उसके बाद नरहरिदास ने रामबोला को गोद ले लिया और उसका नाम तुलसीदास रखा। इस तरह तुलसीदासजी का बचपन बहुत विकट परिस्थितियों में बीता था।

तुलसीदासजी बहुत बुद्धिशाली थे। उस जमाने में सभी ग्रंथ और साहित्य संस्कृत भाषा में थे और सिर्फ ब्राह्मण ही उन ग्रंथों को पढ़ सकते थे। अतः आम लोग भी उन ग्रंथों को पढ़ सकें इस उच्च आशय से तुलसीदासजी ने रामायण का हिंदी भाषा में अनुवाद किया। उनके द्वारा रचित हिंदी भक्ति स्तोत्र 'हनुमान चालीसा', जिसमें हनुमानजी की प्रशंसा में चालीस चौपाईयों का समावेश किया गया है, उनमें से एक चौपाई से हनुमानजी की महानता के बारे में जानकारी मिलती हैः

जुग सहस्त्र योजन पर भानु।
लील्यो ताहि मधुर फल जानु।।

उस जमाने में सभी ग्रंथ और साहित्य संस्कृत भाषा में थे और सिर्फ ब्राह्मण ही उन ग्रंथों को पढ़ सकते थे। अतः आम लोग भी उन ग्रंथों को पढ़ सकें इस उच्च आशय से तुलसीदासजी ने रामायण का हिंदी भाषा में अनुवाद किया।

इस चौपाई में तुलसीदासजी ने हनुमानजी के उस प्रसंग का वर्णन किया है जब हनुमानजी ने सूरज को फल समझकर खाने का प्रयास किया था। इस चौपाई से यह भी पता चलता है कि पृथ्वी से सूर्य तक पहुँचने के लिए हनुमानजी ने उड़ान भर कर कितनी दूरी तय की थी।

जुग = 12000 वर्ष

सहस्त्र = 1000

योजन = 12.8 कि.मी.

जुग सहस्त्र योजन 15,36,00,000 किलोमीटर, जो लगभग पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी के बराबर है। इसका अनुमान तुलसीदासजी ने १६ वीं सदी में बिना किसी वैज्ञानिक उपकरण की मदद के लगाया था। बाद में 17-18 वीं सदी में वैज्ञानिकों ने टेलिस्कोप तथा अन्य अविष्कारों द्वारा सूर्य और पृथ्वी के बीच की सबसे लम्बी दूरी यानी 15,21, 71, 522 किलोमीटर बताया।

तुलसीदासजी, हनुमानजी के प्रति भक्ति का एक श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' की रचना का आरंभ 1575 में किया जो ढ़ाई साल तक चला। उसके बाद वे हमेशा सत्संग और भगवान की आराधना में ही लीन रहते थे।

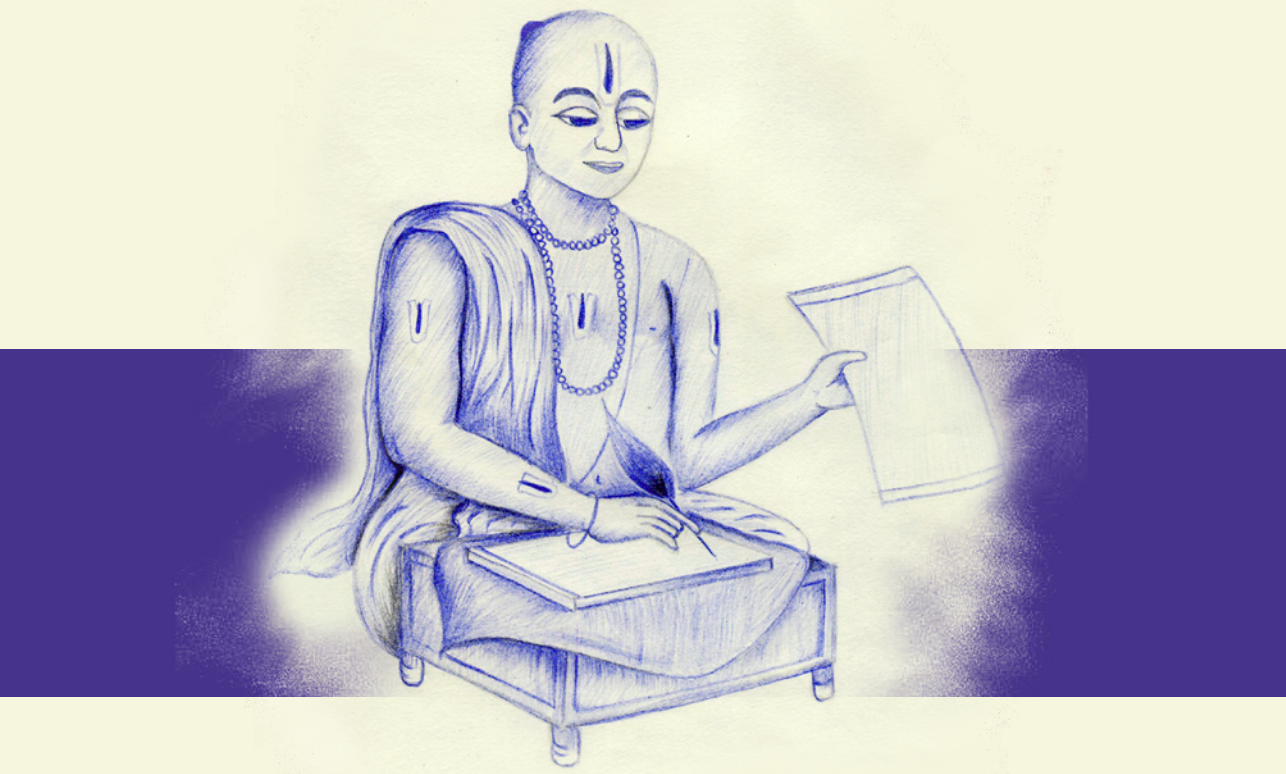

अक्रमपीडिया

हनुमाजी श्रीराम को उबासी आने पर चुटकी बजाने की सेवा करते थे।

नाम : आयुष मेहता
उम्र : 22 वर्ष

हेल्लो फ्रेन्ड्स, सब मजे में हो ना? कोरोना महामारी के कारण हुए लॉकडाउन के दौरान मेरा मोबाइल और टी.वी. का उपयोग इतना बढ़ गया कि मत पूछो।

एक बार मैं टी.वी. के चैनल बदल रहा था तभी मेरा ध्यान हनुमानजी के एक सीरियल पर गया। उसमें मैंने हनुमानजी और श्रीरामजी का एक प्रसंग देखा, हनुमाजी श्रीराम को उबासी आने पर चुटकी बजाने की सेवा करते थे। चुटकी बजाने के लिए हनुमानजी दिन-रात श्रीराम के पीछे-पीछे घूमते रहते।

यह देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। इतने शक्तिशाली होने के बावजूद भी हनुमानजी भगवान राम को थोड़ी सी भी परेशानी न हो और उनको हमेशा श्रीराम के साथ रहने मिले इसलिए खुद के बारे में कुछ भी विचार किए बिना छोटी से छोटी सेवा भी प्रेम से करते थे!!

श्रीराम के प्रति हनुमानजी की ऐसी भक्ति और

सेवा देखकर मुझे बहुत धन्यता अनुभव हुई और मेरा मन किया कि मैं भी कोई सेवा जॉईन करूँ।

इसी भाव के साथ मैंने सेवा के लिए अपना नाम लिखवा दिया। और कुछ ही दिनों में मुझे सेवा करने का मौका मिला। मुझसे कहा गया कि 'इवेन्ट रजिस्ट्रेशन' विभाग में मेरी ज़रूरत है। यूथ इवेन्ट में रजिस्ट्रेशन के दौरान आने वाले टेक्निकल प्रॉब्लम को सॉल्व करने की सेवा मुझे मिली।

लेकिन आज के युवा तो कम्प्यूटर चलाने में बहुत होशियार होते हैं, इसलिए बहुत कम ही किसी को ऐसे प्रॉब्लम्स आते हैं। इसलिए मैंने सेवा जॉइन तो कर ली लेकिन इवेन्ट के दौरान काम करने का ज्यादा मौका नहीं मिला। मैं सोचने लगा, "इस सेवा में मेरा तो कोई योगदान ही नहीं है। ऐसी सेवा करने की मुझे बिल्कुल भी इच्छा नहीं हो रही।" इस तरह असंतोष के कारण मैं दुःखी रहने लगा। मैंने सोचा कि सेवा करने पर तो खुशी मिलनी चाहिए, तो फिर मुझे दुःख क्यों हो रहा है?

पूज्यश्री के सत्संग से मुझे हमेशा मेरे जीवन की सभी उलझनों का समाधान मिल जाता है। विचारों की गुत्थी सुलझाने के लिए मैंने दादा भगवान का 'यू ट्यूब चैनल' सर्च किया, जिसमें मुझे पूज्यश्री का ये सत्संग मिलाः-

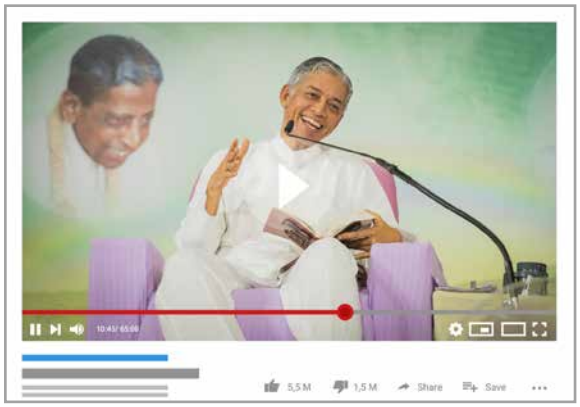

पूज्यश्री : जब (दादा के साथ) मेरे जीवन की शुरुआत हुई तब मुझे ऐसा लगता था, 'बस, मुझे दादा का काम करना है, फिर चाहे जो भी काम मिले।' वह झाड़ू-पोछा लगाने का काम हो या कोई और काम हो। अमेरिका के महात्माओं को रात को 3 बजे रिसीव करने टैक्सी से जाना। उनके भारी-भारी बैग टैक्सी में रखना, उसे घर लेकर आना। इस प्रकार की सब सेवा करता। दादा के महात्माओं की सेवा करने में आनंद आता था। मजदूर की तरह सब सामान उठाना पड़ता था। कभी-कभी टैक्सी नहीं मिलने पर खुद ही थोड़ी दूर तक उठाकर ले जाना पड़ता था। लेकिन फिर भी इसमें बहुत आनंद आता था। क्योंकि ऐसा लगता था कि 'मैं दादा का काम कर रहा हूँ न!' दूसरा यह कि, हम दादा की सेवा तो नहीं कर पा रहे लेकिन दादा के महात्माओं की सेवा करना वह दादा की सेवा करने के बराबर ही है। और सिन्सियरली यह सेवा करते-करते कुदरत हमें ऊँचाई पर ले जाती है। प्रकृति के कषाय खाली होते हैं और ज्ञान की दशा ऊँची आती जाती है।

शक्ति का दुरूपयोग

सुपरमैन, स्पाइडरमैन की शक्ति देखकर हमें भी उनके जैसा शक्तिशाली बनने की इच्छा हो जाती है, और अगर हनुमानजी की शक्ति के बारे में सुनेंगे तो ओहोहो... उनकी तो बात ही अलग है!

हनुमानजी को देवताओं से बहुत से वरदान मिले थे।

इन्द्र : हनुमानजी की मृत्यु उनकी अपनी इच्छानुसार ही होगी।

अग्नि : हनुमानजी को अग्नि से संरक्षण मिलेगा।

“हनुमानजी अपनी शक्तियों को भूल जाएँगे, उन्हें अपनी शक्तियाँ तभी याद आएँगी जब कोई याद दिलाएगा।”

ब्रह्माजी : किसी भी हथियार से हनुमानजी का वध नहीं हो सकेगा।

इनके अलावा और अन्य कई देवताओं से हनुमानजी को शक्तिशाली वरदान प्राप्त हुए थे। उन्हें कुल पंद्रह वरदान मिले थे। लेकिन एक कहावत है ना.....

“With great power comes great responsibility.”

लेकिन जब हनुमानजी को वरदान मिला था तब वे छोटे थे, वे बहुत शरारती थे। जिम्मेदारी क्या होती है उन्हें पता ही नहीं था। एक बार अज्ञानतावश इन शक्तियों का दुरूपयोग करके उन्होंने ऋषियों का यज्ञ भंग कर दिया। इसलिए ऋषियों ने हनुमानजी को श्राप दिया कि :-

“हनुमानजी अपनी शक्तियों को भूल जाएँगे, उन्हें अपनी शक्तियाँ तभी याद आएँगी जब कोई याद दिलाएगा।” ऋषियों ने उन्हें इसलिए श्राप दिया था ताकि उनकी शक्तियों का दुरूपयोग न हो।

जब हनुमानजी को श्रीराम की सेवा करने के लिए शक्तियों की ज़रूरत पड़ी तब जामवंतजी उन्हें उनकी शक्तियाँ याद दिलाते हैं। और हम सभी जानते ही हैं कि इसके बाद हनुमानजी ने अपनी शक्तियों का उपयोग करके कितनी अच्छी तरह से श्रीराम की सेवा की थी!

मित्रों, हमें देवताओं से वरदान तो नहीं मिलते लेकिन बहुत सारी चीज़ें सरलता से मिल जाती हैं और हम जाने-अनजाने उनका दुरूपयोग कर बैठते हैं। सबसे ज्यादा दुरूपयोग जिन वस्तु का करते हैं वह हैं - मोबाइल, इन्टरनेट और सोशल मीडिया जैसे अन्य साधनों का।

हमें ऐसे कोई ऋषि मिलने वाले नहीं हैं जो इन चीजों को विस्मृत करा दें और जब ज़रूरत पड़े तब हमें याद दिला दें। यह काम हमें स्वयं ही करना पड़ेगा।

मोबाइल, इन्टरनेट के बारे में तो हमें पता ही नहीं चलता कि हम इसका दुरूपयोग कर रहे हैं। पढ़ाई के समय गेम्स खेलना, ज़रुरत से ज्यादा सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना, चित्त बिगड़ जाए ऐसे वीडियोज़ देखना, इन सबसे मोबाइल का दुरूपयोग होता है...

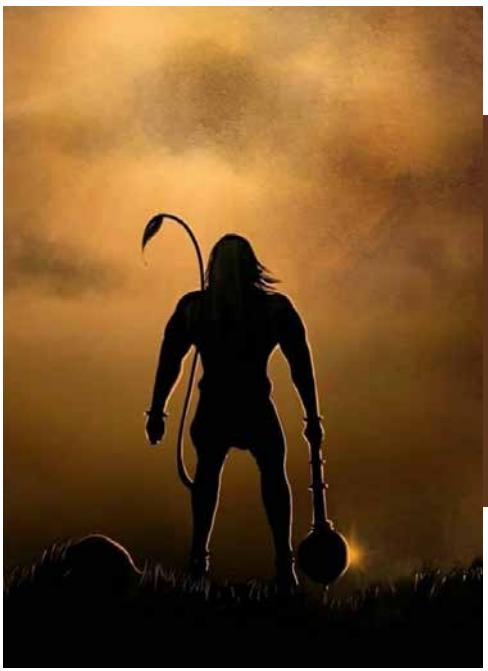

तो चलो, आज तय करें कि हमें टेक्नोलॉजी रूपी जो वरदान मिला है उसका उपयोग तो अवश्य करेंगे, पर दुरूपयोग कभी नहीं करेंगे।

हनुमानजी के नाम ढूँढ़ें

नु	लि	हि	नु	क	ख	लि	प	ग्न	भ	लो	उ	तु	मा	त	थ	पृ	ळ
घ	अ	भ	य	न्त	च	छ	दी	ग्य	ट	क	थ	उ	रु	नि	ल	हु	ली
त्र	मा	ल	धि	वे	व	अे	क	नो	ली	पू	व	लि	मा	फो	र	धी	प
थ्र	फ	त्रि	स	ली	क	ब	ग	ब	य	ज्य	क	मा	उ	धि	म	न	र
दु	श	छि	ष	धि	ग	वे	ग	ल	ळ	य	उ	ट	द	वे	न	अे	वे
नि	मा	ची	जु	दि	अे	रं	न	ख	ब	ॲ	मा	ड	दी	अ	व	ज	ग
के	रु	द्रो	टः	फि	ज	धि	ल	ण	ळ	ई	प	धि	वे	न	क	त	न
श	ति	कु	घ	ब	वे	ण	प	पु	मा	र	आ	अ	नि	ल	बं	अे	य
री	फ	नु	लु	छु	ह	ऑ	धि	रो	क्र	ली	वे	द	ज	ऋ	फ	ध	अ
नं	जि	प	तु	को	न	ऋ	वे	छे	नो	धि	ड	र	न	ऑ	क्स्ह	ब	वे
द	टि	व	प्र	ज्ञ	म	पु	ली	ण	पू	अ	तु	लि	त	ई	ण	मा	ना
न	ध	न	प्र	गो	ग	यु	खि	प	व	न	पु	त्र	ख्स	क्सः	ब्ण	ऋ	डी

१. अभयन्त
२. अनिल
३. अतुलित
४. बजरंगबली
५. दीनबंधवे
६. केशरीनंदन
७. लोकपूज्य
८. मारुति
९. पवनपुत्र
१०. प्रज्ञ।

#कविता

हाथ में गदा सुशोभित है और मुख में राम नाम;
जिनका है बस, स्वामीभक्ति का ही एक काम।

जिनके दिल में हमेशा, श्रीराम-सीता की छबि है;
अनन्य ऐसा समर्पण, इतिहास में अप्रतिम है।

बल-बुद्धि-विद्या, सद्‌गुण सभी तमाम हैं;
फिर भी दंभ नहीं, संग विनय की लगाम है।

सागर लाँघ सकते हैं, भले असीम दूरी है;
भवसागर पार करने, प्रत्यक्ष राम जरूरी हैं।

आज भी युवा वर्ग उनसे, ब्रह्मचर्य शक्ति प्राप्त करते हैं;
भक्त की सूचि में, हनुमानजी ही अग्रसर रहते हैं।

स्वामीभक्ति करके, जगत् में स्वयं भी भगवान बनें;
श्रीराम के साथ-साथ, सभी को हनुमानजी भी याद रहें।

दादा के युवाओं द्वारा

अक्टुबर 2021
वर्ष : 9, अंक : 6
अखंड क्रमांक : 102

Youth Value Addition Camp

For 17 to 21 yrs
YMHT Boys

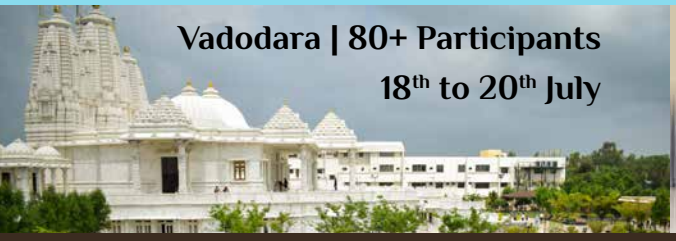

For more such updates, visit : **youth.dadabhagwan.org**

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.